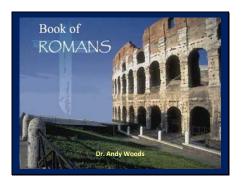
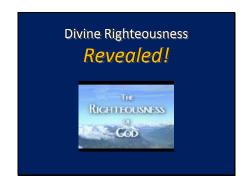
| ~        |     |    | -   |
|----------|-----|----|-----|
| <b>\</b> | 11/ | വ  | ٠ 1 |
| J        | ш   | de |     |





#### Slide 3

Review

| <br> | <br> | <br> |  |
|------|------|------|--|
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      | <br> | <br> |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      | <br> |  |
|      |      | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |

#### **Answering Eight Questions**

- 1) Who wrote it? Paul
- 2) Who was it written to? Roman Believers
- 3) Where was it written from? Corinth
- 4) When was it written? A.D. 57
- 5) Why was it written? Doctrinal Foundation
- 6) What is inside? 7 Part Outline
- 7) What is it about? Righteousness
- 8) What makes the book different? Theological formality

#### Slide 5

#### Structure

- I. Salutation (1:1-17)
- II. Sin (1:18-3:20)
- III. Salvation (3:21–5:21)
- IV. Sanctification (6–8)
- V. Sovereignty (9–11)
- VI. Service (12:1–15:13)
- VII. <u>Summation (15:14–16:27)</u>



#### Slide 6

#### Romans 15:14-16:28

- I. Motivation in writing (15:14-21)
- II. Intention to visit Rome (15:22-33)
- III. Recommendation of Phoebe (16:1-2)
  IV. Greetings to various saints (16:3-16)
- V. Warning against false teachers (16:17-
- VI. Promise of ultimate victory (16:20) VII.Greetings from companions (16:21-24) VIII.Benediction (16:25-27)

| Slide 7 | Romans 15:14–16:28   |
|---------|--|
|         | I. Motivation in writing (15:14-21) II. Intention to visit Rome (15:22-33)                                   |
|         | III. Recommendation of Phoebe (16:1-2) IV. Greetings to various saints (16:3-16)                             |
|         | V. Warning against false teachers (16:17-19)   |
|         | VI. Promise of ultimate victory (16:20) VII.Greetings from companions (16:21-24) VIII.Benediction (16:25-27) |
|         |  |
|         |  |
|         |  |
|         |  |
|         |  |
|         |  |
| Slide 8 | VI. Promise of Ultimate Victory  |
| Slide 8 | VI. Promise of Ultimate Victory<br>(Rom 16:20)   |
| Slide 8 | •  |

VI. Promise of Ultimate Victory (Rom 16:20)

A. Satan's defeat (20a)

B. Grace availability in the meantime (20b)

| <br> |      | <br> |  |
|------|------|------|--|
| <br> | <br> | <br> |  |
| <br> |      | <br> |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
| <br> |      | <br> |  |
| <br> | <br> |      |  |
|      |      | <br> |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      | <br> |  |
| <br> |      | <br> |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
| <br> | <br> | <br> |  |
| <br> |      | <br> |  |
|      |      | <br> |  |
| <br> |      |      |  |
|      |      |      |  |
|      |      |      |  |
| <br> | <br> | <br> |  |

#### Satan's Progressive Defeat

- Initial eviction from heaven (Isa 14:12-15; Ezek 28:12-17) Eden (Gen 3:15)
- Pre-diluvian world (1 Pet 3:19-20)
- Cross (John 12:31; 16:11; Col 2:15; Heb 2:14; 1 John 3:8)
   Mid point of the Tribulation (Rev 12:9)
- Beginning of millennium (Rev 20:2-3)

  End of millennium (Rev 20:10)

Arnold G. Fruchtenbaum, Footsteps of the Mess rev. ed. (Tustin, CA: Ariel, 2003), 551-71.

Slide 11

Romans 8:29-30 <sup>29</sup> For those whom He foreknew, He also predestined to become conformed to the image of His Son, so that He would be the firstborn among many brethren; <sup>30</sup> and these whom He predestined, He also called; and these whom He called, He also justified; and these whom He justified, He also glorified. Where's sanctification?

Slide 12

#### **Chronological Versus Adverbial** Use of tachos

"I hope to come to you soon" (1 Tîm 3:14) vs. "Leave Jerusalem quickly" (Acts 22:18)



| <br> | <br> |  |
|------|------|--|
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> |      |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> | <br> |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> | <br> |  |
|      |      |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> |      |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> | <br> |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> | <br> |  |
|      |      |  |
|      | <br> |  |



VI. Promise of Ultimate Victory (Rom 16:20)

A. Satan's defeat (20a)



B. <u>Grace availability in the</u> <u>meantime (20b)</u>

#### Slide 14



#### Slide 15

VII. Greetings from Paul's Companions (Rom 16:21-23)

- A. Timothy, Lucius, Jason, Sosipater (21)
- B. Tertius (22)
- C. Gaius, Quartus, Erastus (23)

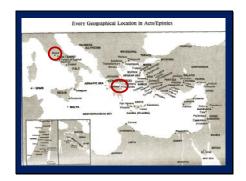


| <br> | <br> | - |
|------|------|---|
|      |      |   |
|      |      | _ |
| <br> | <br> | _ |
|      |      |   |
|      |      | - |
| <br> | <br> | _ |
|      |      |   |
|      | <br> | - |
| <br> | <br> | _ |
|      |      |   |
|      |      | - |
| <br> | <br> | _ |
|      |      |   |
|      |      | - |
| <br> | <br> |   |
|      |      |   |
|      |      | - |
| <br> | <br> | _ |
|      |      |   |
| <br> | <br> | - |
| <br> | <br> |   |
|      |      |   |
| <br> | <br> | - |
| <br> |      | _ |
|      |      |   |
| <br> | <br> | _ |
| <br> |      |   |



# Slide 19 VII. Greetings from Paul's Companions (Rom 16:21-23) A. Timothy, Lucius, Jason, Sosipater (21) B. <u>Tertius</u> (22) C. Gaius, Quartus, Erastus (23) Slide 20 Influence of Romans Romans "...stands behind virtually all great movements of God in the last 1900 years." Wallace, "Romans: Introduction, Outline, and Argument," 1. Slide 21 VII. Greetings from Paul's Companions (Rom 16:21-23) A. Timothy, Lucius, Jason, Sosipater (21) B. Tertius (22) C. Gaius, Quartus, Erastus (23)

Slide 22



VII. Greetings from Paul's Companions (Rom 16:21-23)

- A. Timothy, Lucius, Jason, Sosipater (21)
- B. Tertius (22)
- C. Gaius, Quartus, Erastus (23)



#### Slide 24

VII. Greetings from Paul's Companions (Rom 16:21-23)

- A. Timothy, Lucius, Jason, Sosipater (21)
- B. Tertius (22)
- C. Gaius, Quartus, <u>Erastu</u>s (23)



| <br> | <br> | <br> |
|------|------|------|
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      | <br> |      |
| <br> |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
| <br> | <br> | <br> |
| <br> | <br> | <br> |
| <br> | <br> | <br> |
| <br> |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |
|      |      |      |

| In in 1929, among the executed mins of ancient Corinth was discovered an incerption on a matthe parsing store bearing the anne of fractus. The interpriets need ERASTINS PRO. AED. S. P. STRAVIT, which is an abbeviation of ERASTINS PRO AEDILITATE SIA PECUNIAS INSAVIT. The incerption translates as "Fratzus in return for his acide-hip, laid this pavement at his own expense." The office of acidit was the commissioner of public works and, for this reason, abig ratking public official belonging to the formur fulling class in a city Poal mentionen and Erastic from Consistent the late to the Romans (16.23) and identifies him as "the city treasure" (alternation) |
|--|

#### Sir William M. Ramsay



Sir William M. Ramsay. <u>The Bearing of Recent Discovery</u> on the Trustworthiness of the <u>New Testament</u>, (Grand Rapids, MI: Baker Bookhouse, 1959), 1914.

#### Slide 27

#### VIII. Benediction (Rom 16:25-27)

- A. <u>Description of the gospel</u> (25a)
- B. "Mystery" (25b-26a)
- C. "Scriptures" (26b)
- D. "Command of the eternal God" (26c)
- E. "All of the nations" (26d)
- F. "Obedience of faith" (26e)

| <br> | <br> |  |
|------|------|--|
| <br> | <br> |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> |      |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> | <br> |  |
| <br> |      |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> |      |  |
| <br> | <br> |  |
|      |      |  |
|      |      |  |
| <br> |      |  |
|      | <br> |  |

#### **New Testament Mysteries**

- Kingdom mysteries Matthew 13:11
- Mystery of the Seven Stars and Lampstands Rev. 1:20
- Mystery of the Body of Christ Ephesians 3:3, 5
- Mystery of the Indwelling Christ Colossians 1:26
- Mystery of the Bride of Christ Ephesians 5:32
- Mystery of the Translation I Corinthians 15:51
   Mystery of Israel's Hardening Romans 11:25
- Mystery of Babylon Revelation 17:5, 7
- Mystery of Lawlessness II Thessalonians 2;7 Arnold G. Fruchtenbaum, Footsteps of the Messiah, rev. ed. (Tustin, CA: Ariel 2003), 659-703.

#### Slide 29

#### VIII. Benediction (Rom 16:25-27)

- A. Description of the gospel (25a)
- B. "Mystery" (25b-26a)
- C. "Scriptures" (26b)
- D. "Command of the eternal God" (26c)
- E. "All of the nations" (26d)
- F. "Obedience of faith" (26e)

#### Slide 30

# Jesus as the Theme of the Bible (Luke 24:27, 44; John 5:39, 46)

- Anticipation of Christ (OT)
- Manifestation of Christ (Gospels)
- Explanation of Christ (Epistles)



■ Consummation of Christ (Revelation)

| <br> | <br> |
|------|------|
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
|      |      |
|      | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
|      |      |
|      | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
| <br> |      |
|      |      |
|      |      |
|      | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
|      |      |
|      | <br> |
|      |      |
|      |      |
|      | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
|      | <br> |
|      |      |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
|      |      |
|      |      |
| <br> | <br> |
| <br> |      |
|      |      |
|      |      |
|      |      |

| Slide 31 | VIII. Benediction (Rom 16:25-27)       |  |
|----------|--|--|
|          | A. Description of the gospel (25a)     |  |
|          | B. "Mystery" (25b-26a)                 |  |
|          | C. "Scriptures" (26b)                  |  |
|          | D. "Command of the eternal God" (26c)  |  |
|          | E. " <u>All of the nations</u> " (26d) |  |
|          | F. " <u>Obedience of faith</u> " (26e) |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
| Slide 32 | VIII. Deposition (Depos 45:25, 27)     |  |
|          | VIII. Benediction (Rom 16:25-27)       |  |
|          | G. Description of God (27)             |  |
|          | 1. "Only wise God"                     |  |
|          | 2. "Through Jesus Christ"              |  |
|          | 3. "Be glory forever"                  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
| Slide 33 |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          | Conclusion                             |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |
|          |  |  |

#### Romans 15:14-16:28

- I. Motivation in writing (15:14-21)
- II. Intention to visit Rome (15:22-33)
- III. Recommendation of Phoebe (16:1-2)
- IV. Greetings to various saints (16:3-16)
- V. Warning against false teachers (16:17-19)
- VI. <u>Promise of ultimate victory (16:20)</u> VII.<u>Greetings from companions (16:21-24)</u>
- VIII.Benediction (16:25-27)

#### Slide 35

#### **Answering Eight Questions**

- Who wrote it?
- Who was it written to?
- Where was it written from?
- When was it written?



#### Slide 36

#### **Answering Eight Questions**

- Why was it written?
- What is inside (outline)?
- What is it about?
- What makes the book different?

| 7 |    | W | 150 |
|---|----|---|-----|
| ( |    | X |     |
| A | 4  |   |     |
|   | V. |   |     |

| <br> | <br> | <br> | <br> |  |
|------|------|------|------|--|
|      | <br> |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |
|      |      |      |      |  |

2 Cor 4:4-in whose case the god of this world has blinded the minds of the unbelieving so that they might not see the light of the gospel of the glory of Christ, who is the image of God.

Isa 9:7-There will be no end to the increase of *His* government or of peace, On the throne of David and over his kingdom, To establish it and to uphold it with justice and righteousness From then on and forevermore.

## 2 Tim 4:11-Only Luke is with me

1 Cor 12:22-23-On the contrary, it is much truer that the members of the body which seem to be weaker are necessary; and those *members* of the body which we deem less honorable, on these we bestow more abundant honor, and our less presentable members become much more presentable

1 Cor 1:14-17-I thank God that I baptized none of you except Crispus and Gaius, so that no one would say you were baptized in my name. Now I did baptize also the household of Stephanas; beyond that, I do not know whether I baptized any other. For Christ did not send me to baptize, but to preach the gospel, not in cleverness of speech, so that the cross of Christ would not be made void.

Rom 16:1-I commend to you our sister Phoebe, who is a servant of the church which is at Cenchrea.

Matt 12:48-50-But Jesus answered the one who was telling Him and said, "Who is My mother and who are My brothers?" And stretching out His hand toward His disciples, He said, "Behold My mother and My brothers! "For whoever does the will of My Father who is in heaven, he is My brother and sister and mother."

Erastus, the city treasurer "has been identified with the civic official of that name mentioned in a Latin inscription on a marble paving-block discovered at Corinth in 1929 by members of the American School at Athens: 'ERASTVS. PRO. AED. S. P. STRAVIT' ('Erastus, in return for his aedileship, laid this pavement at his own expense'). The aedile ('commissioner for public works') was a responsible magistrate in a Roman city. The office of *oikonomos*, perhaps 'clerk of works' rather than 'city treasurer', was a much humbler one (Lat. *arcarius*). Since the pavement seems to belong to a later part of the first century, it might be inferred that Erastus acquitted himself so satisfactorily in the inferior office that he was promoted to the higher magistracy, and showed his appreciation of the honour thus done him by presenting the city with a marble pavement. He need not be identified with the Erastus of Acts 19:22 or 2 Timothy 4:20; the name was common enough."

http://www.soniclight.com/constable/notes/pdf/romans.pdf

One of the greatest archaeologists of all time was Sir William Ramsay. He studied under the famous German historical schools in the midnineteenth century, which taught that the New Testament was a religious treatise written in the mid-200s AD, and not an historical document recorded in the first century. Ramsay was so convinced of this teaching that he entered the field of archaeology and went to Asia Minor to specifically find the physical evidence to refute Luke's biblical record. After years of field study, Ramsay completely reversed his entire view of the Bible and first century history. He wrote:

http://www.allaboutthejourney.org/saint-luke.htm

Rom 1:11-For I long to see you so that I may impart some spiritual gift to you, that you may be established

Rom 1:16-17-For I am not ashamed of the gospel, for it is the power of God for salvation to everyone who believes, to the Jew first and also to the Greek. For in it *the* righteousness of God is revealed from faith to faith; as it is written, "BUT THE RIGHTEOUS *man* SHALL LIVE BY FAITH."

Gen 3:15-And I will put enmity Between you and the woman, And between your seed and her seed; He shall bruise you on the head, And you shall bruise him on the heel.

Rom 11:25-For I do not want you, brethren, to be uninformed of this mystery—so that you will not be wise in your own estimation—that a partial hardening has happened to Israel until the fullness of the Gentiles has come in.

Eph 2:20-having been built on the foundation of the apostles and prophets, Christ Jesus Himself being the corner *stone* 

Rom 1:1-2-Paul, a bond-servant of Christ Jesus, called *as* an apostle, set apart for the gospel of God, which He promised beforehand through His prophets in the holy Scriptures

Luke 24:27-Then beginning with Moses and with all the prophets, He explained to them the things concerning Himself in all the Scriptures.

Luke 24:44-Now He said to them, "These are My words which I spoke to you while I was still with you, that all things which are written about Me in the Law of Moses and the Prophets and the Psalms must be fulfilled."

John 5:39-You search the Scriptures because you think that in them you have eternal life; it is these that testify about Me

John 5:46-For if you believed Moses, you would believe Me, for he wrote about Me.

Rev 13:8 (KJV)- And all that dwell upon the earth shall worship him, whose names are not written in the book of life of the Lamb slain from the foundation of the world.

Matt 28:19-Go therefore and make disciples of all the nations, baptizing them in the name of the Father and the Son and the Holy Spirit

Rom 15:18-For I will not presume to speak of anything except what Christ has accomplished through me, resulting in the obedience of the Gentiles by word and deed

Dan 2:20-Let the name of God be blessed forever and ever, For wisdom and power belong to Him.

John 14:6-Jesus said to him, "I am the way, and the truth, and the life; no one comes to the Father but through Me.

Acts 4:12-And there is salvation in no one else; for there is no other name under heaven that has been given among men by which we must be saved

1 Tim 2:5-For there is one God, *and* one mediator also between God and men, *the* man Christ Jesus

Rev 5:9-Worthy are You to take the book and to break its seals; for You were slain, and purchased for God with Your blood *men* from every tribe and tongue and people and nation.

Jude 24-25-Now to Him who is able to keep you from stumbling, and to make you stand in the presence of His glory blameless with great joy, to the only God our Savior, through Jesus Christ our Lord, *be* glory, majesty, dominion and authority, before all time and now and forever. Amen.